



हँसना मना है

लेखन: शेरिल राव

शांति और अरुण अच्छे मित्र थे। उन्हें एक दूसरे के साथ खेलने में बहुत मज़ा आता था। घर वापस जाते समय अक्सर उनके बीच दौड़ लग जाती थी। शांति हमेशा खुश रहने वाली लड़कियों में से थी।

एक दिन शांति धीमे धीमे चलती हुई कक्षा में आई। उसका चेहरा लटका हुआ था। वो बहुत उदास दिख रही थी। “क्या तुम्हें किसी ने डाँटा?” अरुण ने पूछा। शांति ने अपना सिर हिला कर मना कर दिया। वह बैठ गई।

उसने न तो सिर उठाकर देखा और न ही ‘उपस्थित’ कहा, जब सोना दीदी ने उसका नाम पुकारा। “शांति कुमारी!” सोना दीदी ने ऊंची आवाज़ में फिर से पुकारा। शांति ने अपना हाथ खड़ा कर दिया।

“क्या तुम्हारे गले में खराश है?” दीदी ने पूछा। शांति ने सिर हिलाकर न कह दिया। उसके गाल लाल हो गए थे, ऐसा लग रहा था जैसे, उसे बुखार हो। सोना दीदी ने पूछा, “तुम्हारी तबीयत ठीक है।” हाँ, शांति ने फिर से सिर हिलाया, लेकिन चेहरा उठा कर उनकी तरफ़ देखा नहीं।





“आखिर शांति इतनी उदास क्यों लग रही थी?” “तुम्हारा छोटा भाई तो मजे में हैं ना?” “तुम्हारा पालतू कुत्ता तो तंग नहीं कर रहा ना?” “तुम्हारी दादी की तबियत ठीक है ना?” शांति सभी दोस्तों के सवालों पर सिर हिलाती रही, लेकिन उसने चेहरा ऊपर नहीं उठाया।

अरुण शान्ति को हँसाना चाहता था, उसे एक उपाय सूझा। उसने अपना बस्ता खोला और उसमें से कुछ निकाला। जैसे ही वह उसे शांति को दिखाने के लिए दौड़ा, वह चीज़ उसके हाथ से फिसल गई। शांति ने देखा कि कोई चीज़ उड़कर उसके पास आ रही है। उसने लपककर चीज़ को पकड़ लिया।

शांति को दिखा, एक बड़ा सा रबड़ का मेंढक! शांति की आँखें खुली की खुली रह गई, फिर उसने मुँह खोला जोर से हँसने के लिए। तब अरुण और बाकी सब को समझ आया, क्यों शांति पूरे दिन न हँस रही थी और न ही बातें कर रही थी। दरअसल सामने के चार दाँत जो गायब हो गए थे उसके!

समाप्त

Click below to follow us:



You Tube

facebook

